कांग्रेस और रचनात्मक कार्यकर्ता

रजि० नं० बी ४४४८

# हरिजनसेवक

दो आना

(स्थापक: महात्मा गांधी)

भाग १५ सम्पादक: किशोरलाल मशरूवाला सह-सम्पादक: मगनभाओी देसाओी अंक ३९

मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाओी देसाओी
नवजीवन मुद्रणालय, अहमदाबाद-९

अहमदाबाद, शनिवार, ता० २४ नवम्बर, १९५१

वार्षिक मूल्य देशमें रु० ६
विदेशमें रु० ८; शि० १४

## विनोबाजी दिल्लीमें

विनोबाजीके दिल्ली पहुंचनेका समाचार दैनिक पत्रोंमें विस्तारके साथ आ ही गया है। मैं यहां अुसका रेखा-वृत्तान्त ही देता हूं:

श्री विनोबा १३ नवम्बरको सुबह दिल्ली पहुंचे। राजधानीकी जनताने अुनका अुत्साहपूर्ण स्वागत किया। वे सीधे राजघाट गये, और गांधीजीकी समाधि पर अुन्होंने प्रार्थना की। दिल्लीमें वे राजघाट पर ही रहेंगे।

विनोबाजीके भूदान-यज्ञका आरम्भ ता० १३ को ही राष्ट्रपति डॉ० राजेन्द्रप्रसादकी भूदानकी घोषणासे हुआ। राष्ट्रपति पहले ही विनोबाको लिखे अपने पत्रमें भूदान करनेकी अपनी अिच्छा प्रगट कर चुके थे। यहां अुन्होंने अुसकी प्रगट घोषणा की और बाबा राघवदाससे, जो अिसी सिलसिलेमें विनोबाके साथ घूम रहे हैं, अनुरोध किया कि वे बिहारमें अुनकी जमीन यथावकाश खुद देखकर, अुसमें से जितनी चाहें, ले लें।

अपनी अिस यात्रामें विनोबाको मिली हुअी भूमि प्रदेशवार अिस तरह है:

| | | |
|---|---|---|
| मध्यप्रदेश | ६,७०० | अेकड़ |
| विन्ध्यप्रदेश | १,००० | ,, |
| मध्यभारत | ५०० | ,, |
| राजस्थान | ४०० | ,, |
| अुत्तरप्रदेश | १०,८३६ | ,, |
| कुल | १९,४३६ | |

तेलंगानामें मिली १६,००० अेकड़ भूमिके साथ अभी तक मिली हुअी कुल जमीन ३५,००० अेकड़ ही गअी है।

दिल्ली पहुंचनेके पहले विनोबा शाहदरामें रुके थे। वहां भी स्थानीय तथा दिल्ली-निवासियोंने अुनका धूमधामसे स्वागत किया और अुन्हें सूत-गुंडियोंकी मालाअें पहनाअीं। यहां अुन्हें कथित जरायम-पेशा जातियोंके अेक सदस्यने अेक प्रार्थना-पत्र दिया, जिसमें अुनसे यह अनुरोध किया गया है कि वे जरायम-पेशा जातियों सम्बन्धी कानून रद्द करवानेमें अपने प्रभावका अुपयोग करें। यह कानून बम्बअी तथा दूसरे कुछ प्रान्तोंमें रद्द किया जा चुका है। मांग सर्वथा न्यायोचित है। विनोबाजीने अुक्त सज्जनको वचन दिया कि वे अिस विषयमें अधिकारियोंसे बात करेंगे। मेरी अपनी राय तो है ही कि यह कानून अुठा लिया जाना चाहिये।

दिल्ली पहुंचनेके पहले विनोबाने दिल्ली-निवासियोंके नाम यह संदेश दिया था:

"भूदान-यज्ञका प्रचार करता हुआ अब मैं दिल्ली पहुंच रहा हूं। दिल्ली हमारे देशकी राजधानी है। सारे देशके बड़े-बड़े लोग वहां रहते हैं। अिसके अलावा अब तो हमारे लिअे वह अेक पवित्र यात्राका स्थान बन गया है। हमारे राष्ट्रपिताका वह समाधि-स्थान है। अुनकी समाधिके नजदीक ही हम लोगोंका पड़ाव रखा गया है। अुसकी साक्षीमें अपने गरीब भूमिहीनोंके वास्ते, अुनका हक समझकर और अुन्हें अपने कुटुंबीजनके तौर पर मान्य करके, दिल्लीके स्थायी और अस्थायी निवासी दिल खोलकर भूमि देंगे, अैसी मैं अुम्मीद रख रहा हूं। यह जरूरी नहीं कि वह भूमि दिल्ली सूबेमें ही हो; हिन्दुस्तानमें कहीं भी हो, दे सकते हैं। जिनके पास भूमि नहीं लेकिन पैसा है, वे खरीद कर दान कर सकते हैं।

"लोग यह याद रखें कि मैं भीख नहीं मांग रहा हूं, बल्कि हकके तौर पर लेना चाहता हूं और अुन्हें अेक नये आदर्शके सिद्धान्तोंकी दीक्षा दे रहा हूं।"

वर्धा, १५-११-'५१ कि० घ० मशरूवाला

पुनश्च: कहा जाता है कि भारत सरकारने दिल्लीमें जरायम-पेशा जाति कानूनको रद्द करनेका फैसला कर लिया है। विनोबाने सम्बन्धित मंत्रीको यह सलाह दी है कि वे देशके दूसरे हिस्सोंमें भी यह कानून रद्द करा दें।

(अंग्रेजीसे) कि० घ० म०

## राष्ट्रीय शिक्षामें अंग्रेजीका स्थान

[पिछले महीने बम्बअीमें अ० भा० शिक्षा परिषद् हुअी थी। अुसमें अिस विषयकी चर्चाका आयोजन किया गया था, जिसमें मुझसे भी भाग लेनेको कहा गया था। अुस समय मैंने जो विचार जाहिर किये, अुनका सार नीचे दिया जाता है। —म० दे०]

हमारे राष्ट्रके भावी शिक्षाक्रममें अंग्रेजीके स्थानकी चर्चा करनेमें अंग्रेजीके महत्त्वका और अुसकी व्यापकता तथा सुन्दरताका गुणगान करना अनावश्यक है। सब जानते हैं कि अंग्रेजी कितनी विकसित और समृद्ध भाषा है; यह भी जानते हैं कि अुसका साहित्य-भंडार अपार है और वह दिनोंदिन बढ़ता ही जाता है। विविध प्रकारके ज्ञान-विज्ञानकी शाखायें अुस भाषाके जरिये कैसी खिल रही हैं; अंग्रेजी जिनकी मातृभाषा है, वे लोग कैसे देशाभिमानी, प्रगतिशील और पुरुषार्थी हैं और समग्र राष्ट्रीय गुणोंकी झलक कैसी खूबीसे अपनी भाषा द्वारा दिखाते हैं, यह भी सब जानते हैं। अिसीलिअे तो हम अिस बातका विचार करते हैं कि हमारे शिक्षणतंत्रमें अुस भाषाका क्या स्थान है।

पर अैसे गुणगानकी अेक मर्यादा है, अिस बात पर आज हमें खास ध्यान देना चाहिये। असमय या अनावश्यक गुणगान करनेसे लोगों पर गलत असर पड़ता है; अुनके मनमें यह भ्रम घर कर बैठता है कि अंग्रेजीका वर्चस्व जैसा था वैसा ही — शायद अुससे भी ज्यादा — आज भी बना रहना चाहिये। आम जनता देखती है कि व्यवहारमें तो यह वर्चस्व आज भी कायम है। और जिसके मनमें आता है, वही अुसका गुणगान करने लगता है, जिससे सामान्य जनता हैरान होती है। अिससे हमारे विचारोंमें

www.vinoba.in

अस्पष्टता और व्यर्थकी अुलझन पैदा होती है, जो बुरी चीज है। अुससे बचनेके लिअे भी आज अंग्रेजीके गुणगानकी गीता गानेकी जरूरत नहीं। बल्कि जरूरत अिस बातकी है कि गहरा और स्पष्ट विचार करके हमारे शिक्षणक्रममें अंग्रेजीका स्थान् तय कर दिया जाय। आज जैसा चल रहा है, वैसा अगर चलता ही रहा तो अिस बातकी बड़ी आशंका है कि यह हमारी सारी शिक्षाका दम घोट देगा। यह हालत शिक्षणमें क्रांति पैदा कर देनेवाली है।

अिसका विचार करनेके लिअे हमारे डेढ़ेक सदीके अर्वाचीन अितिहासका अवलोकन करना ठीक होगा। स्पष्ट विचारके लिअे अिसकी जरूरत भी है। सौ डेढ़सौ बरस पहले हमारे देशमें अंग्रेजी शिक्षा दाखिल हुअी, अुस समय जो मुख्य व्यक्ति या विचार-शाखायें थीं, अुनकी जांच करनेसे पता चलता है कि अुनके नये सुधारके पीछे तीन दृष्टियां थीं:

१. राजा राममोहन राय जैसे विद्याप्रेमी भारतीयोंकी दृष्टि यह थी कि ज्ञान-विज्ञानकी प्रवृत्तिके लिअे हमारे पास संस्कृत, अरबी, फारसी जैसी समृद्ध भाषाओंका साधन मौजूद है। अब अंग्रेजीका अेक अैसा नया साधन हमें मिलता है, जिससे पश्चिममें खिली हुअी नअी विद्याअें हम सीख सकेंगे। अिसलिअे अुस भाषाका अभ्यास प्रारंभ करने जैसा है।

अिस दृष्टिको विद्याविकास या ज्ञानवृद्धिकी दृष्टि कह सकते हैं। राजा राममोहन राय अिस पर जोर देते थे और अुसीकी वजहसे वे अंग्रेजी शिक्षाका स्वागत करनेके लिअे तैयार हुअे थे। अिस शाखाके अनुयायी आज भी देखनेमें आते हैं। अिसी शाखामें से हमारे देशके 'मॉडरेट' या 'लिबरल' या अुदारपंथी कहे जानेवाले राजनीतिज्ञ, समाज-सुधारक, शिक्षाशास्त्री वगैरा निकले हैं। आज मौके-बेमौके अंग्रेजीका गुणगान करते रहनेवाले लोग अिसी विचार-शाखाके अवशेष जैसे माने जायंगे।

अिसके अलावा, दूसरी जो दो दृष्टियां थीं, वे अिससे सर्वथा भिन्न थीं। और वे अिसमें से निकलती भी नहीं थीं। अुनकी दिशा, वृत्ति और अुद्देश्य अलग ही था। वे दो दृष्टियां हमारे अंग्रेज शासकोंकी थीं:

२. लार्ड बेंटिन्क राज-कारोबारकी दृष्टिसे अंग्रेजीको भारतमें दाखिल करना चाहता था। अुसने अुस समय भी यह समझ लिया था कि अगर अंग्रेजोंको अिस देश पर राज करना है, तो अन्तमें वह अुनकी अपनी भाषामें ही चल सकता है। अिसलिअे दूरंदेशीसे काम लेकर अुसने अंग्रेजीको राज-कारोबारकी भाषा बनाया और यह प्रस्ताव पास किया कि अुसके लिअे देशमें अंग्रेजी शिक्षा दी जानी चाहिये। अिस कारणसे अंग्रेजी भाषाके साथ नौकरीका घातक गठबन्धन हुआ और देशभरमें अंग्रेजी शिक्षाकी आंधी जोरोंसे चल पड़ी। यह केवल शिक्षामें ही नहीं, समाजकी रचनामें भी परिवर्तन लानेका कारण बना।

३. अिसीके साथ मिलती-जुलती और अिसे मदद पहुंचानेवाली दूसरी दृष्टि लार्ड मेकॉलेकी थी। अुसने यह देखा कि अंग्रेजी शिक्षण द्वारा हम भारतीयोंमें अंग्रेज प्रजाके लिअे आदरभाव और मान पैदा कर सकेंगे। वे पश्चिमकी रहन-सहन और सुधारोंकी तरफ झुकेंगे, जिससे अंग्रेज प्रजा भारतकी आगे बढ़नेवाली प्रजाके गुरुपदका गौरव प्राप्त करेगी। अिसलिअे अुसने यह प्रस्ताव पास कराया कि शिक्षाका माध्यम भी अंग्रेजी ही रहे। और वह प्रस्ताव आज तक कायम है। अिससे शिक्षामें भी क्रांति हुअी।

पराअी भाषाके भारने अुसे लगभग खतम ही कर दिया।

अूपरकी लार्ड बेंटिन्ककी दूसरी दृष्टिको राज-कारोबारकी मानें और मेकॉलेकी तीसरी दृष्टिको सांस्कृतिक मानें, तो ज्ञानवृद्धिकी पहली दृष्टिके साथ मिलाकर कुल तीन खयालोंसे अंग्रेजीका शिक्षण हमारे देशमें शुरू हुआ। ये तीनों खयाल आज अेक सदीके प्रयोगके बाद कैसे फले-फूले और दूसरी तरफ अुन्होंने शिक्षाकी बढ़तीको कैसे रोका, अिसका अितिहास बड़ा दिलचस्प है। अुसमें हम नहीं जाते। लेकिन अितना तो अब साफ हो गया है कि अिन तीनों खयालोंके बारेमें, देशने अेक खास प्रस्ताव करके आगे कैसे बढ़ा जाय, अिसका निर्णय कर लिया है। अिस निर्णयसे जिस पुरुषार्थ और बलका राष्ट्रमें संचार होना चाहिये था, वह नहीं हुआ, यह दुःखकी बात है। परन्तु यह निर्णय अटल और अचल है, अितिहाससे सिद्ध है — सच्चा है; और यह चीज वातावरणमें अस्पष्ट रूपसे तो मौजूद है ही कि अुस पर अमल किये बिना दूसरी गति नहीं। वह निर्णय है:

१. आज जो भारतकी राजभाषा अंग्रेजी है, वह १५ वर्षमें बदल कर हिन्दी हो जायगी।

२. शिक्षाका माध्यम अंग्रेजी नहीं रहेगी।

यानी अूपरकी तीन दृष्टियोंमें से जो दो दृष्टियां अंग्रेजोंने हमारे राष्ट्रके सिर थोपी थीं, अुन दोनोंको हटानेकी नीति राष्ट्रने अब तय कर ली है। लेकिन ज्ञानवृद्धिके साधनके रूपमें अंग्रेजी भाषाको रखनेकी राजा राममोहन रायकी दृष्टि अभी तक छोड़ी नहीं है। अिस तरह, स्वतंत्रताके आनेसे हम अंग्रेजीके बारेमें स्वाभाविक विचार कर सकनेकी स्थितिमें आ गये हैं और अिस प्रकार बीचके वर्षोंकी गुलामी दूर करनेके बारेमें जाग्रत हो गये हैं। स्वतंत्रताने हमें यह जो मौका दिया है, अुसका फायदा अुठाना चाहिये। अुसके बदले आज भी अच्छे-अच्छे लोग अूपर बताअी हुअी दो त्याज्य दृष्टियोंसे — माध्यम और राजभाषा सम्बन्धी दृष्टियोंसे — जड़तासे चिपटे रहना चाहते हैं। और अैसे लोग तथाकथित अग्रगण्य माने जाते हैं, यह परिस्थितिकी विपरीत करुणता है। और अंग्रेजीके गुणगान करते रहनेवाले वर्ग भी ज्यादातर अिन्हीं लोगोंसे बने हैं। अंग्रेजीके जरिये देशमें जो स्थापित हित अंग्रेजी राज्यमें कायम हुअे और जिनका अधिकार आज भी बना हुआ है, वे हितधारी भी अिन्हीं लोगोंमें से हैं। ज्ञानवृद्धिके लिअे तो अंग्रेजी रहेगी ही, यह विश्वास दिला देनेके बाद अुन्हें सन्तोष रखना चाहिये। अिसलिअे हमारे सामने सवाल यह है कि अंग्रेजीको अब शिक्षणमें क्या स्थान दिया जाय कि जिससे अुपरोक्त स्थापित हित समझ जायं और हमारा राष्ट्रीय निर्णय पूरा हो सके। अंग्रेजी भाषामें जो सामग्री भरी पड़ी है, वह हमारे कामकी है अिसमें विवादकी गुंजाअिश नहीं। जगतकी हर किसी भाषाका ज्ञानभंडार हमारे लिअे अुपयोगी होगा, तो फिर अंग्रेजीको तो अितिहासने हमें सौंपा है। अुसके ज्ञानभंडारको खोनेका सवाल ही पैदा नहीं होता। लेकिन अिस विषयमें सच्चे विवेकसे काम लेना चाहिये।

यह ज्ञानभंडार क्या भारतके सारे लोग लूट सकते हैं? क्या अिसके लिअे वे सब अंग्रेजी पढ़ सकते हैं? सौ बरसके बाद भी कितने लोग अंग्रेजी जानते हैं? हमारे लिअे अुस भाषामें मिलनेवाले ज्ञानका अुपयोग है; हां, वह ज्ञान हरअेकको अुसकी भाषामें मिले अिसका प्रबन्ध करना चाहिये। अिससे सम्बन्ध रखनेवाली शिक्षण योजना पर विचार करना चाहिये।

आज जो चलता है, अुससे तो अुलटा नतीजा हुआ है। अंग्रेजी शिक्षा पाये हुअे लोगोंकी अेक अलग ही जाति बन गअी है। वे सरकारी नौकरी करके या अैसे दूसरे 'सफेद धन्धे' करके जीवन-निर्वाह करनेवाले अूपरी वर्गके लोग बन बैठे हैं। अंग्रेजी द्वारा मिलनेवाले ज्ञानकी परवाह करनेकी बनिस्बत यह खयाल ज्यादा बढ़ा है कि अुससे लाभ और स्वार्थ सिद्ध होता है। अिसके कारण प्रजामें अूंच-नीचका और असमानताका भाव बढ़ रहा है। शिक्षामें अुसने बाड़ाबन्दी पैदा कर दी है। अिसलिअे अंग्रेजीको हमारे राष्ट्रीय शिक्षणमें क्या स्थान दिया जाय, अिसका निर्णय करनेके लिअे अुठाया जानेवाला कदम केवल शिक्षणकी ही नहीं,

www.vinoba.in

बल्कि भारी सामाजिक और शासनिक क्रांतिका कदम सिद्ध होने वाला है। अिसलिअे राष्ट्रकी सरकारोंको अैसी क्रांतिकी दृष्टि सामने रखकर ही अिस प्रश्न पर विचार करना है कि अंग्रेजीको शिक्षाक्रममें क्या स्थान दिया जाय।

अैसी महान क्रांतिका मार्ग देशको गांधीजीके राष्ट्रीय शिक्षणके आदर्शमें से तथा अुससे सम्बन्ध रखनेवाले रचनात्मक कार्य द्वारा मिल जाता है। अिसकी संक्षिप्त रूपरेखा नीचे बताअी गअी है, जिसे देश जानता है। लेकिन अुस पर अमल किया जाय, तो वह भारी अुथलपुथल मचाता है। अिसलिअे सरकारें यानी अुनके मंत्री डरते हैं, क्योंकि आजका शिक्षित वर्ग शिक्षाके बारेमें बिलकुल प्रत्याघाती सिद्ध हुआ है। फिर भी यह तो निश्चित है कि देशमें सच्ची राष्ट्रीय शिक्षाको जन्म दिये बिना स्वराज्यकी सुरक्षा या प्रगति संभव नहीं है। और मौजूदा शिक्षा-पद्धति अब टूटनेकी सीमा पर पहुंच गअी है; अब अुसे कोअी बचा नहीं सकता। अिसलिअे अब नअी शिक्षा-सृष्टि रचनेका समय आ पहुंचा है; अिससे हम बच नहीं सकते।

भविष्यमें अंग्रेजीको शिक्षणमें नीचे लिखे अनुसार स्थान दिया जाना चाहिये:

१. पढ़ाअीके पहले सात वर्षोंमें (यानी पहले दर्जेसे सातवें दर्जे तक) किसी भी तरह अंग्रेजीको स्थान न दिया जाय। पांचवें दर्जेसे राष्ट्रीय हिन्दीको स्थान मिलना चाहिये। यह स्पष्ट है कि अिसलिअे भी तीसरी किसी भाषाको स्थान नहीं मिल सकता।

२. दर्जा ८ से दर्जा ११ — यानी हाअीस्कूलके पांच वर्षोंमें अंग्रेजी दाखिल की जाय। लेकिन सब विद्यार्थियोंके लिअे अुसे अनिवार्य बनाना जरूरी नहीं है। जो अंग्रेजी न लेना चाहें, वे भारतकी प्रांतीय भाषाओंमें से (स्वभाषाके अलावा) और अेक भाषा लें। जैसे, मराठी, कन्नड़, तामिल, तेलगू, बंगला वगैरा। अनेक विद्यार्थी ११ वें दर्जे तक पढ़कर रुक जाते हैं। अैसे लोगोंके लिअे अंग्रेजीके बजाय यह ज्यादा अुपयोगी और आवश्यक होगा कि वे अपने पड़ोसी प्रांतकी भाषा जानें। जैसे-जैसे देशकी जनता स्वराज्यका अुपभोग करेगी, वैसे-वैसे अुसे स्वभाषाके साथ देशकी दूसरी भाषाओंका ज्ञान जरूरी मालूम होगा। अिस दीर्घ-दृष्टिको भी नहीं भूलना चाहिये कि यह ज्ञान परस्पर परिचय बढ़ाने और अेकता कायम करनेमें मदद करेगा। आज बहुतसे लोग यदि अंग्रेजी लें, तो कोअी हर्जकी बात नहीं। अितना काफी है कि जो लोग अंग्रेजी न लेना चाहें, अुन्हें दूसरी भाषा लेनेकी छूट दी जाय।

३. जो युनिवर्सिटी या कॉलेजका शिक्षण लेना चाहें, अुन्हें अंग्रेजी समझने जितना ज्ञान होना आज तो जरूरी है। अिसलिअे हमारी भाषाओंकी आजकी स्थितिमें अंग्रेजी पुस्तकें काममें ली जा सकेंगी। और अंग्रेजी द्वारा देशी भाषाओंको समृद्ध बनानेका काम भी चलता रहेगा। फिर भी कुछ लोगोंके लिअे अैसी व्यवस्था होनी चाहिये कि वे अंग्रेजीके बिना भी कॉलेजकी शिक्षा ले सकें। अैसा प्रयोग नवनिर्माणमें मदद करेगा।

अूपरका कार्यक्रम आज शिक्षासुधारके रूपमें स्वीकारा भी गया है। यानी अिसमें कोअी नअी बात नहीं है। यह चीज गांधीजीने कभीकी देशके कार्यक्रममें दाखिल कर दी है। आज अुसके विरुद्ध जोरोंसे प्रतिक्रिया होना स्वाभाविक है। अुसे जीतकर आगे बढ़नेके लिअे अूपरका स्पष्ट नकशा सामने रखना चाहिये। अिसमें बम्बअी जैसे शहरोंको, जहां अंग्रेजी पढ़े हुअे लोगोंके अड्डे ज्यादा देखनेमें आते हैं, खास मदद करनी चाहिये। वे प्रत्याघात या प्रतिक्रियाके अड्डे न बनें, यह अुनकी बहुत बड़ी सेवा मानी जायगी।

अहमदाबाद, ३-११-'५१ **मगनभाअी देसाअी**
(गुजरातीसे)

# श्री शूरजी वल्लभदास

ता० १४ नवम्बरको बम्बअीमें श्री शूरजी वल्लभदासका लगभग ६४ वर्षकी अुम्रमें देहान्त हो गया। ग्रामोद्योग संघकी स्थापनाके समयसे ही वे अुसके व्यवस्थापक-मंडलके सदस्य रहे। गोसेवाके काममें भी अुन्हें बहुत रस था। अिस सिलसिलेमें अुन्हें अकसर वर्धा आना पड़ता था; और जब आते थे, तब दो-चार घंटे मेरे साथ बिताना वे कभी चूकते नहीं थे। सन् १९३२ में नासिक जेलमें हम लोग कुछ माह अेक साथ रहे, अुस समय अुनके घनिष्ठ परिचयका अवसर मिला। अिसके पहले मैं अुनसे कभी मिला नहीं था।

व्यापार-धंधेमें अुनकी होशियारी, बारीकी, कार्यकुशलता, मनुष्यको परखनेकी शक्ति आदि तो सर्वत्र प्रसिद्ध ही थी। कुछ लोगोंके मुंहसे अुनकी निन्दा भी सुनी थी। नासिक जेलमें मैं अुनसे अिन बातोंकी पूछताछ करता और वे बहुत शांति और विनोदसे अुनका अितिहास बताते। कअी बार खुद अपनी ही हंसी अुड़ाते। वे अपने दोष निःसंकोच स्वीकार कर लेते थे। किसीके मनमें कपट हो, तो अुसे ताड़ लेनेकी अुनमें अद्भुत क्षमता थी।

स्वामी आनन्दसे मैंने अुनकी मातृभक्तिकी प्रशंसा सुनी थी। अनेक महीनों तक अुन्होंने अपनी मांकी वैसी ही सेवा की, जैसी कोअी मां दूध-पीते बच्चेकी करती है, और अिस तरह अपना मातृ-ऋण चुकाया।

अुनकी दिनचर्या — नहाना, खाना, पीना, वेश-भूषा, सब संयम और सुरुचिका आदर्श था। शरीर स्वस्थ और सुन्दर, कद अूंचा, पहनावा अुसीके अनुरूप आकर्षक, सब मिलाकर अुनका दिखावा आकर्षक था।

आर्यसमाजके वे अति श्रद्धालु भक्त थे, और गायके दूध-घीका अतिशय आग्रह रखते थे।

यहां कुछ दिनोंसे अुनके पेटमें कैंसर हो गया था। अुसके अिलाजके लिअे वे अमेरिका गये थे और वहांसे शस्त्र-क्रिया करानेके बाद कुछ ही माह पहले वापिस आये थे। सबका खयाल था कि बीमारी गअी। लेकिन तबीयत फिर बिगड़ी और वेगसे बिगड़ती चली गअी। मृत्युके अेक ही सप्ताह पहले अुन्होंने अपने पास राष्ट्रकार्यके लिअे पड़ी हुअी करीब १२,६०० रुपयेकी रकम कुछ सूचनाओंके साथ मुझे भेजी थी। अुनकी सूचनाओंके अनुसार ही यह रकम मैंने योग्य कार्योंमें लगानेके लिअे अखिल भारतीय चरखा संघमें जमा करा दी है।

मरण तो कभी न कभी आने ही वाला है। अुसका शोक नहीं करना है। लेकिन मरनेवाला सुकीर्ति लेकर जाय, तो अुसका सद्भाग्य है। और यदि अुसका अभाव पीछे रह जानेवालोंको खलता है, तो यह पीछे रह गअी दुनिया पर अुसके अुपकारोंकी छाप है। श्री शूरजीभाअी सुकीर्ति भी ले गये हैं, और पीछे रह गअी दुनिया अुनके अुपकारोंको भी याद करेगी।

वर्धा, १५-११-'५१ **कि० घ० मशरूवाला**
(गुजरातीसे)


## बापूके पत्र मीराके नाम

अनु० **रामनारायण चौधरी**

कीमत ४–०–० डाकखर्च ०–१३–०

## गांधी और साम्यवाद

[श्री विनोबाकी भूमिका सहित]

लेखक: **किशोरलाल मशरूवाला**

कीमत १–४–० डाकखर्च ०–४–०

**नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद–९**


www.vinoba.in

हरिजनसेवक

२४ नवम्बर १९५१

# कांग्रेस और रचनात्मक कार्यकर्ता

बिहार चरखा संघके श्री लक्ष्मीबाबू और अुनके कुछ साथियोंने अेक परिपत्रक भेजा है। परिपत्रक, संक्षेपके लिअे यहां-वहां कुछ वाक्योंको छोड़कर, अिस प्रकार है:

देशके स्वतंत्र होनेके बाद जो पहला आम चुनाव होने जा रहा है, अुस चुनावके लिअे कांग्रेसकी ओरसे घोषणा-पत्र प्रकाशित हो गया। अैसे घोषणा-पत्रका विशेष महत्त्व होता है।

स्वतंत्रताकी लड़ाअी लड़ते समय कांग्रेसने देशके भावी सामाजिक अेवं आर्थिक संगठनके सम्बन्धमें कुछ मौलिक सिद्धान्तोंको अपनाया था। अिसलिअे बहुतसे अैसे लोग, जिनका राजनैतिक दलबन्दीसे कोअी प्रत्यक्ष सम्बन्ध नहीं था, भी अुसका साथ देते रहे हैं, चूंकि अुनकी दृष्टिमें अुन मौलिक सिद्धान्तोंको अमली रूप देनेके हर मौकेको सफल बनाना अुनका फर्ज था। आज अिस घोषणा-पत्रके द्वारा अुन्हें यह सोचने और समझनेका मौका मिला है कि अुन मौलिक सिद्धान्तोंके लिअे कांग्रेस-दलकी सरकारसे कहां तक क्या आशा करनी चाहिये। कांग्रेसी शासनका अब तकका रवैया अुन मौलिक सिद्धान्तों (जिनका स्पष्टीकरण आगे होगा) के लिअे कुछ अच्छा नहीं रहा है, यह तो स्पष्ट ही है। परन्तु जो बात अब तक साफ नहीं हुअी थी, वह यह है कि कांग्रेसने अपना दृष्टिकोण ही बदल दिया है।

शासनके अनुभवोंसे लाभ अुठाकर अपने पुराने सिद्धान्तोंको छोड़ने या बदलने तथा अपने दृष्टिकोणको घटाने या बढ़ानेका व्यक्ति और संस्था दोनोंको हक है। अिसलिअे हम लोगोंको अिस बारेमें कोअी शिकायत नहीं है। लेकिन अब यह समय जरूर आ गया है कि कांग्रेसके साथ हमारा अब तक जो सम्बन्ध रहा है, अुस पर अिस घोषणा-पत्रकी रोशनीमें फिरसे विचार किया जाय।

घोषणा-पत्रके आरंभमें ही गांधीजी द्वारा प्रदर्शित नीति और कार्यपद्धतिकी चर्चा की गअी है। हमारी समझमें अिस घोषणा-पत्रमें गांधीजीका नाम घसीटनेकी कोअी जरूरत नहीं थी, जब कि गांधीजीके जमानेके कांग्रेसके मौलिक सिद्धान्तोंसे ही अिस घोषणा-पत्रमें अिनकार किया गया है।

घोषणा-पत्रमें कहा गया है कि स्वतंत्रताकी लड़ाअीके समय ही हमारा अुद्देश्य केवल राजनैतिक स्वाधीनता प्राप्त करना नहीं था, बल्कि जनताको अभाव और शोषणसे मुक्त करना भी था। परन्तु अिस अुद्देश्यकी पूर्ति किस प्रकार होगी, अिसके सम्बन्धमें कांग्रेसने तब जो विचार माना था, आज अुसका अिसमें कोअी अुल्लेख नहीं है। बल्कि अुसका विचार अुससे भिन्न प्रतीत होता है। गांधीजीने गांवोंकी कल्पना स्वराज्यकी अिकाअीके रूपमें की थी। गांवोंको अुनकी मूल आवश्यकताओंके बारेमें स्वावलम्बी बनाकर वे स्वराज्यकी जड़ गांवोंमें जमाना चाहते थे। अिसीलिअे खादी और ग्रामोद्योगके कार्यक्रमको अुन्होंने स्वराज्यकी लड़ाअीमें सबसे आगे रखा था।

प्रस्तुत घोषणा-पत्रमें गांवोंको अिस प्रकार स्वावलम्बी बनानेकी कोअी कल्पना नहीं है। बल्कि कल्पना अिसके विपरीत है। यह कहा गया है कि सहकारिता द्वारा खेतीके रास्तेको अपनाया जाये, परन्तु अिस बातका जिक्र ही नहीं है कि हमारी खेती विदेशी तेलसे चलनेवाले गांवोंके बाहर बने ट्रेक्टरों और बाहरसे लाअी गअी कृत्रिम खादों पर निर्भर करेगी या गांवमें पैदा होनेवाले बैल, हल और गोबर-करसीकी खाद पर। घोषणा-पत्रका अिस दिशामें बिलकुल मौन रहना कुछ अर्थ रखता है।

अिसी तरह ग्रामोद्योगोंका भी कोअी जिक्र नहीं है, जिक्र है छोटे पैमानेवाले तथा कुटीर अुद्योगों (small-scale and cottage industries)का। अिन अुद्योगोंसे ग्रामोद्योगोंका क्या भेद है, यह किसीको बताना नहीं होगा। ग्राम-अुद्योग वे अुद्योग हैं, जो ग्राम-जीवनके मूल आधार हैं, जिनके अूपर गांवकी आर्थिक स्वावलम्बिता निर्भर करती है। अुनके बिना गांवोंकी सम्पन्नता जेलकी सुख-सुविधाकी तरह बाहरकी देन होगी, अपने भीतरकी सहज पैदावार नहीं। अिसके बदले छोटे पैमानेके तथा कुटीर अुद्योग, जिनका अुल्लेख घोषणा-पत्रमें हुआ है, लोगोंको अपनी आय बढ़ानेका सहारामात्र हो सकते हैं। घोषणा-पत्रमें स्पष्ट रूपसे यह कहा भी गया है: "जमीनके बल पर ही जो अपनी जीविका कमाते हैं, अैसे लोगोंकी संख्या बहुत ज्यादा है। जमीन पर अुनके अिस अत्यधिक बोझको, अिस संख्याके अेक हिस्सेको दूसरे धंधोंमें लगाकर, कम करनेकी जरूरत है। अिनमें से कुछको तो बड़े-बड़े अुद्योगोंमें लिया जा सकता है, लेकिन मुख्य रूपसे तो अुन्हें काम छोटे पैमाने-वाले तथा गृह-अुद्योगोंके जरिये ही मिलेगा।"

फिर अुसके साथ अेक चेतावनी भी है कि जो भी छोटे पैमानेके तथा कुटीर अुद्योग चलाये जायें, अुनमें सर्वोत्तम क्रियापद्धति (best technique) का अुपयोग होना चाहिये, ताकि वे कार्यक्षम और आर्थिक दृष्टिसे लाभदायक हों। क्या अिसका नतीजा वही नहीं होनेवाला जान पड़ता है, जो अंग्रेज सरकारकी कुटीर शिल्पोंको प्रोत्साहन देनेकी नीतिका हुआ था? अुदाहरणार्थ, धानकी हाथ-कुटाअीको क्षमताहीन तथा आर्थिक दृष्टिसे त्रुटिपूर्ण बताकर चावलके मिल खड़े होते रहेंगे। तेलघानीका स्थान तेल तथा वनस्पतिके मिल लेते जायेंगे और बेकारीको दूर करनेके लिअे खिलौना बनानेके जापानी यंत्रोंका प्रवेश कुटीरोंमें कराकर लोगोंको सुखी-सम्पन्न बनानेके प्रयत्न किये जायेंगे। ग्रामोद्योगोंकी जो मूल कल्पना थी कि गांवकी मूल आवश्यकताओंकी पूर्तिके अुद्योग गांवके भीतर, गांववालोंकी प्रेरणासे और गांवमें अुपलब्ध शक्ति, सामग्री अेवं साधनोंसे चलने चाहियें, क्या अुसको अिस प्रकार गांधीजीका नाम आरम्भमें लेकर तिलांजलि नहीं दी गअी है?

मानो लोगोंको किसी प्रकारका भ्रम न रह जाये, अिसलिअे खादीका स्थान हाथ-करघेके अुद्योगको दिया गया है। कहा गया है कि करघा-अुद्योग हम लोगोंका प्रमुख कुटीर अुद्योग है और सरकारसे वह सभी सहायताका हकदार है। अब तक अिस अुद्योगको सूतकी कमीसे धक्का लगता आ रहा है, अिसलिअे सरकारको चाहिये कि वह पर्याप्त सूतका अिस अुद्योगके लिअे प्रबन्ध करे। मिलोंके सूतसे चलनेवाला करघा ही हमारा प्रमुख कुटीर अुद्योग है, यह कांग्रेसकी आज घोषणा है जो ब्रिटिश राजके विशेषज्ञोंकी धारणा थी और जिसके विरुद्ध गांधीजीके नेतृत्वमें चरखा संघने अितनी लम्बी लड़ाअी लड़ी।

www.vinoba.in

जो हो, कांग्रेसकी आजकी यह नीति है, अितना स्पष्ट कर देनेके लिअे हम अिस घोषणा-पत्रके लेखकके बहुत आभारी हैं। यह स्पष्ट समझमें आ गया कि कांग्रेस पार्टी द्वारा संचालित शासन यंत्रमें हम अिसी बातकी आशा रखें कि गांव बड़े-बड़े औद्योगिक शहरोंके अूपर निर्भर रहनेवाले और अुनकी कृपा पर जीनेवाले अनुचर मात्र होंगे — भले ही वे चिकने-चुपड़े और मोटे-ताजे (well-fed or well-clothed) बनाये जायें।

यही मौलिक भेद है जिसने वनस्पतिकी बेजरूरत बाढ़में हमारे गोधनको डुबाया है। अिसी भेदने चावलका अुद्योग चौपट किया, घानियोंको बैठाया, गुड़ बनाने पर रोक लगवायी तथा अन्य कितने ही ग्रामोद्योगोंकी कब्र खोदी। जिस आदर्शको सामने रखकर महात्मा गांधीने सत्याग्रहकी लड़ाअी लड़ी थी, अुस आदर्शसे आज कांग्रेस कितनी दूर हट गअी है, अिसका अेक और भी ज्वलन्त अुदाहरण है। अितने लम्बे घोषणा-पत्रमें मद्य-निषेधके सम्बन्धमें अेक भी शब्द नहीं है। अिसके विपरीत अिस घोषणा-पत्रके रचयिता और कांग्रेसके सर्वे-सर्वा पंडित जवाहरलाल नेहरूने घोषणा-पत्रकी बहसमें कहा कि चूंकि हम अपनी आर्थिक स्थिति पर कोअी खतरा अुठाना नहीं चाहते, अिसलिअे यह घोषणा-पत्र मद्य-निषेधके बारेमें मौन है। क्या बम्बअी आदि राज्योंमें जो कदम बढ़ाया गया है, वह आर्थिक दृष्टिसे गलत है? और अुसे वापस ले लिया जायेगा? क्या बिना मद्य-निषेध किये पिछड़े हुअे वर्गोंका अुद्धार सम्भव है? पिछड़ी हुअी कौमोंके अुद्धारका खास भार सरकार पर माना गया है। परन्तु अुनके सांस्कृतिक अेवं आर्थिक अुद्धारके लिअे जो पैसा खर्च किया जायेगा, वह अुन्हें ही मादक द्रव्य पिलाये बिना प्राप्त नहीं हो सकता, अैसी आज कांग्रेसकी मान्यता है। मद्य-निषेधके बारेमें कांग्रेसकी यह नअी दृष्टि क्या अुसके अिस दावेको पुष्ट करनेवाली है कि गांधीजीके जिन दो सिद्धान्तोंका ("हम जिन साधनोंका आश्रय लेते हैं, अन्तमें वे ही हमारे साध्यका निर्णय करते हैं।" तथा "राष्ट्रीय जीवनकी रचनामें नीति और सदाचारकी बुनियाद महत्त्वकी चीज है।") घोषणा-पत्रके आरम्भमें अुल्लेख किया गया है, अुनमें अुसका कोअी विश्वास है?

कांग्रेसके कारनामे गत चार वर्षोंमें यही साबित करते रहे हैं कि अुसकी कोअी स्थिर नीति नहीं है, और शायद कोअी नीति है तो वह अपने सिद्धान्तोंको दफना देनेकी। केवल पुराने ही नहीं नये सिद्धान्तोंका भी अस्तित्व अुनकी अवहेलना द्वारा ही साबित होता है। हिन्दुस्तान अेक धर्म-निरपेक्ष राज्य है, अिसको बार-बार दुहराया जाता है। लेकिन हिन्दूसभा अेवं रामराज्य परिषद् जैसी संस्थाओंको अेक राजनैतिक दलके रूपमें चुनावमें मान्यता दी जाती है! अेक धर्मनिरपेक्ष राज्यमें हिन्दूसभा या मुस्लिम जमायत आदि नामधारी किसी संघको चुनावमें राजनैतिक दलकी मान्यता दी जा सकती है, यह सामान्य बुद्धिके बाहरकी बात है। आजकी दुनियामें राजनैतिक दलोंका संगठन अेकमात्र आर्थिक अेवं सामाजिक सिद्धान्तोंके आधार पर ही सोचा जा सकता है। परन्तु धर्मनिरपेक्ष राज्यकी दुहाअी देते हुअे यहां अैसा आचरण किया जा रहा है। जात-पांतका कांग्रेसकी दलबन्दियोंमें जो बोलबाला है, वह तो गैरसरकारी कहकर नजरअन्दाज भी कर दिया जा सकता है। परन्तु सरकारके अैसे कामोंका क्या कारण बताया जायगा?

स्त्रियोंके अुद्धारके सम्बन्धमें भी बहुत कुछ कहा गया है, जिसकी सच्चाअीकी जांच लोग अगले चुनावमें करेंगे। परन्तु यह न भूलना चाहिये कि देशभरमें मद्यके प्रचारसे सर्वोपरि कष्ट स्त्रियोंको ही भोगना पड़ता है।

अिस घोषणा-पत्रकी हर बातकी आलोचना करना हमारा ध्येय नहीं है। हम तो केवल यही बतलाना चाहते हैं कि महात्मा गांधीके नामके साथ अिसका श्रीगणेश केवल विघ्न-शांतिके लिअे किया गया है, ताकि कांग्रेस अपने नये नेतृत्वके नये मार्ग पर चलनेका 'लाअिन क्लियर' पा सके। अिसीलिअे हमने अूपर लिखा है कि यह कहीं बेहतर होता कि गांधीजीका नाम ही नहीं लिया जाता। जहां खादी अेवं ग्रामोद्योगके मौलिक सिद्धान्तोंकी अिस प्रकार हत्या हो रही हो, वहां यह दावा कि हम देशके शासनको गांधीजीके नैतिक सिद्धान्तों पर चलायेंगे बिलकुल बेबुनियाद-सी बात है। जिस आधार पर अहिंसक समाजको खड़ा करनेकी संभावना है, अुस आधार पर स्वावलम्बी अेवं नैतिक जीवनसे ही यहां अिनकार है। अिसलिअे लगता तो यह है कि जिन लोगोंको गांधीजीकी अुपर्युक्त कल्पनामें विश्वास है, अुनके लिअे अब कांग्रेसके भीतर स्थान नहीं रहा। जो लोग अहिंसक समाजका आदर्श मानते हुअे खादी, ग्रामोद्योग, मद्य-निषेध आदिको अुसके साधनका प्रमुख मार्ग मानते आये हैं, अुनके लिअे अब रास्ता अलग करनेका समय स्पष्ट रूपसे आ गया है।

कांग्रेसके घोषणा-पत्र पर श्री लक्ष्मीबाबूकी अिस आलोचनासे मेरी सामान्य सहमति है। यह दूसरी बात है कि अुसे प्रकट करनेकी मेरी भाषा अलग तरहकी हो। लेकिन दो बातें अिसमें मुझे ठीक नहीं जान पड़तीं। पहली यह कि कांग्रेस सरकार साम्प्रदायिक संस्थाओंको राजनैतिक दलोंकी तरह काम करने देती है। मुझे लगता है कि संविधानके अनुसार यह चीज रोकी नहीं जा सकती। अगर जनता अिन संस्थाओंको नापसन्द करती है, तो वह अुनका साथ नहीं देगी। लेकिन अगर जनता अुन्हें चाहती है, तो जब तक वे कानूनकी हदमें और कानूनकी राहसे काम करती हैं, तब तक सरकार अुन पर प्रतिबन्ध नहीं लगा सकती। यही बात कम्युनिस्ट पार्टीके लिअे भी लागू है।

दूसरी, श्री लक्ष्मीबाबू आग्रह करते हैं कि घोषणा-पत्रसे जो सहमत नहीं हैं, अुन्हें कांग्रेसका त्याग ही कर देना चाहिये। अैसे कअी कांग्रेसी हो सकते हैं, जो आर्थिक कार्यक्रमके बारेमें लक्ष्मीबाबूसे अेकराय हों, परन्तु जिन्हें लगता हो कि अगर वे कांग्रेसमें बने रहें और अुसीके जरिये काम करें, तो धीरे-धीरे अुसके अन्दर अपना बहुमत बना सकेंगे और कांग्रेसकी वर्तमान नीतिमें अनुकूल परिवर्तन ला सकेंगे। सब लोग अुनकी अिस आशासे सहमत नहीं होंगे, पर अिस दृष्टिको बिलकुल अनुचित नहीं कहा जा सकता। राजनैतिक कार्यक्रममें अुनका विश्वास है, और रचनात्मक कार्यकर्ताओं द्वारा अपनाअी गअी अथवा "गांधीवादी आदर्शों" का पूर्ण रूपसे वरण करनेवाली दूसरी किसी राजनैतिक संस्थाके अभावमें यह नहीं कहा जा सकता कि अैसे रचनात्मक कार्यकर्ता कांग्रेसमें रहकर दूसरे कार्यकर्ताओंकी सफलतामें बाधा डाल रहे हैं। अगर वे अीमानदार हैं और जब जरूरत होती है तब अपना मत निःसंकोच प्रकट करते हैं, तो रचनात्मक कार्यकर्ताओंको अुनका कांग्रेसमें रहना अखरना नहीं चाहिये। आखिर, सभी कांग्रेसी कार्यकर्ताओंने अभी तक अपने जीवनका अधिकांश या तो कांग्रेसके अन्दर या अुसके साथ काम करते हुअे बिताया है। अिसलिअे अगरचे अब अिस संस्थासे कोअी अुम्मीद न रह गअी हो, तब भी अुसके प्रति अुनकी पुरानी प्रीति बनी रहना स्वाभाविक है। अिसलिअे हमारे जो साथी कांग्रेसमें हैं, अुनसे रचनात्मक कार्यकर्ताओंको नाराज नहीं होना चाहिये, यद्यपि कांग्रेस हमारी आशाओंके अनुरूप नहीं है।

वर्धा, २७-१०-'५१ क्रि० घ० मशरूवाला

www.vinoba.in

# विनोबाकी तेलंगाना-यात्रा

८

## छठा मुकाम

[ता० २०-४-'५१: सरवैल: ८ मील]

गत वर्ष बुद्ध-जयंतीके अवसर पर यहां श्री नारायण रेड्डीने सर्वोदय-केन्द्र शुरू किया है। पहलेसे यहां बीमारोंकी सेवाका काम चलता था। अब अुसके साथ कताअी, बुनियादी शाला, ताड़गुड़-केन्द्र आदि काम भी शुरू हुअे हैं। कस्तूरबा-केंद्र भी चलता है।

विनोबाजी करीब ७-३० बजे यहां पहुंचे। गांवके लोगोंने अनेक प्रकारके वाद्यों और गीतोंसे अुनका स्वागत किया।

९ बजे विनोबा गांव-प्रदक्षिणाके लिअे निकले। पहले कस्तूरबा-केंद्र देखने गये। दो बहनें अिस केंद्रमें कार्य करती हैं। पूर्व बुनियादी और बुनियादी, दोनों अुम्रके बालक आते हैं। प्रौढ़-शिक्षाका काम भी चलता है। बच्चोंका काम देखकर और अुनके मुखसे कुछ गीत-कहानी वगैरा सुनकर विनोबा गांवके अन्य भाग देखने गये।

गांव दिखानेके लिअे अकसर कार्यकर्ता ही मार्गदर्शन करते हैं और योजनापूर्वक सारा गांव दिखाते हैं। आज विनोबा अपनी अिच्छासे गांव देखना चाहते थे, अिसलिअे जिधर अुनकी अिच्छा होती, अुस तरफ वे मुड़ जाते और सारी भीड़ अुनके पीछे हो लेती।

### कहीं धूप, कहीं छांवके ये दृश्य!

हरिजनोंके मोहल्लेमें गये, बुनकरोंके मोहल्लेमें गये, और भी मकानोंमें हो आये। घर साफ-स्वच्छ थे।

बुनकरोंमें दो प्रकार दिखे। संतुष्ट और चिंतित। चिंतित वे, जो केवल मिलके कोटे पर आधार रखते थे — महीनेमें अेक हफ्ता बुनते, तीन हफ्ता बेकार! संतुष्ट वे थे, जो हाथ-करघा बुनते थे। अुनका करघा कभी खाली नहीं रहता। मिलोंके हिमायती, खादीके विरोधी और बाहरसे लांग-स्टेपल कपास मंगानेकी सिफारिश करनेवाले अर्थशास्त्री अेक बार हिन्दुस्तानके देहातोंमें घूमकर धूप-छांवका यह दृश्य देखनेका कष्ट तो करें!

### समस्याका हल: सेवामें

तेलंगाना-यात्राके अब तकके अिस पचास मीलके प्रवासमें जगह-जगह लोग कम्युनिस्टोंसे कमोबेशी प्रमाणमें त्रस्त पाये गये थे। जगह-जगह अुनके द्वारा पहुंची पीड़ाका हाल सुना और देखा था। लेकिन अिस गांवके लोगोंने बताया कि यद्यपि अिर्द-गिर्दके लोग कम्युनिस्टोंकी वजहसे कुछ परेशान-से हैं, लेकिन यहां तो अमन है, कोअी तकलीफ नहीं है। विनोबाको अिस अमनका कारण खोजते देर नहीं लगी। श्री नारायण रेड्डी कअी दिनोंसे यहां सेवाकार्यमें जुटे हुअे थे। अपने श्वसुरकी ओरसे मिली हुअी जमीनमें से अुन्होंने दो सौ से अधिक अेकड़ जमीन गरीब किसानोंमें बांट दी थी। अिसलिअे — यद्यपि अिर्द-गिर्दके लोग कम्युनिस्टोंके कारण कुछ त्रस्त थे — यहां अुनका प्रवेश भी नहीं हो सका था। कम्युनिस्ट सवालको पैदा ही न होने देनेका यह अेक राज-मार्ग था, जिसकी ओर ध्यान दिलाते हुअे संध्या-प्रवचनमें विनोबाने समझाया कि "जहां कुछ न कुछ सेवा चलती है, वहां कम्युनिस्टोंके लिअे कोअी क्षेत्र नहीं रहता।"

अब तक कम्युनिस्टोंके कामका जो अनुभव हुआ था, अुसके आधार पर अुनके काम करनेके तरीकेके बारेमें कुछ साफगोअीकी आवश्यकता थी।

विनोबाने कहा: "वे लोग गरीबोंमें घूमते हैं, कष्ट अुठाते हैं, अिसका मुझे आनन्द है। लेकिन अुन्होंने काम करनेका जो तरीका अख्तियार किया है, वह गलत है। अुन लोगोंने हिंसाका तरीका अख्तियार किया है। लेकिन वे हिन्दुस्तानकी सभ्यताको जानते नहीं। यह देश अितना विशाल और पुराना है कि यहांकी सभ्यताका खयाल रखे बिना जो यहां काम करना चाहेगा, वह कामयाब नहीं होगा। बाहरके राष्ट्रोंमें बहुत हिंसा चलती है और वे लोग युद्धके बाद युद्ध करते रहते हैं। यदि हिन्दुस्तानमें वह तरीका चला, तो हिन्दुस्तान बरबाद हो जायगा।"

कम्युनिस्टोंके कामके बारेमें कहा:

"निजाम और रजाकारोंके जुल्मोंसे जब सारे लोग भयभीत हो गये थे, दब गये थे, तब संभव है कम्युनिस्टोंने लोगोंको जगाया हो, अुनको ढाढ़स बंधाया हो। लेकिन जब हिन्दुस्तानमें लोकसत्ता आ गअी है, तब हिंसाका आश्रय लेना गलत है।"

विनोबाने यह आशा प्रगट की कि यद्यपि कम्युनिस्टोंके कुछ साथी अिस बारेमें सोचनेसे भी अिनकार करते हों, परन्तु अुनमें जो जिम्मेदार हैं, वे अैसा नहीं कर सकते। सोचनेसे अिनकार करनेको भी विनोबाने जड़ता ही बताया: "लेकिन कम्युनिस्टोंको सही रास्ते पर लानेका तरीका यही है कि दूसरे लोग सेवामें लग जायं। मुझे खुशी है कि कुछ लोगोंने यहां वह मार्ग अख्तियार किया है।"

### वानप्रस्थ सेवक-संस्थाके पुनर्निर्माणकी जरूरत

फिर विनोबाने यहांके सेवकोंको कामकी तीन कसौटियां बताअीं। अेक तो यह कि ताड़-गुड़ बनानेका जो काम यहां चल रहा है, अुसकी परिणति संपूर्ण नशाबंदीमें होनी चाहिये। अिन अमृत-वृक्षोंको आज जो जहरके वृक्ष बना दिया गया है, वह रुक जाना चाहिये। दूसरी, सब गांवोंको खादीमय बनानेकी। और तीसरी, गांवमें न कोअी बिना कामका रहे, न बिना अन्नका। "ये तीन पेपर मैंने आपके लिअे दिये हैं। अिनमें आपको पास होना है।"

लेकिन अंतमें अेक बहुत महत्त्वकी बात समझाअी — सेवकोंकी सेना तैयार करनेकी: "यह नहीं समझना चाहिये कि सेवा करनेका धंधा कुछ ही लोगोंका है और बाकी सब लोग स्वामी हैं। यहां आश्रममें जो सेवक अिकट्ठे हुअे हैं, अुनके जैसे पांच-पचास लोग गांवमें तैयार हो जाने चाहियें।"

अिस सम्बन्धमें वानप्रस्थ-आश्रमकी योजनाको समझाते हुअे विनोबाने अपने दिलकी बात कह दी:

"पहले हिन्दुओंमें अैसी व्यवस्था थी कि हर मनुष्य वानप्रस्थी बनकर सबकी सेवामें लग जाता था। परन्तु अब तो वानप्रस्थ खतम ही हो गया। विवाह करके लोग आमरण संसारमें फंसे रहते हैं। होना यह चाहिये कि थोड़े दिन लड़के-बच्चोंकी सेवा करनेके बाद समाजकी सेवामें लग जाना चाहिये। चार आश्रमोंमें से अेक वानप्रस्थ आश्रम होता है; यानी चार व्यक्तियोंमें से अेक समाजकी सेवाके लिअे तैयार होता है। यानी आपकी अिस बारह सौकी जनसंख्यामें से तीन सौ सेवक मिलने चाहियें। अिसलिअे मैं चाहूंगा कि आप लोगोंमें जो लोग चालीस-पैंतालीस बरसकी आयुके हैं, वे स्त्रियां हों या पुरुष, मनमें विचार करें कि अब विषय-वासनासे मुक्त होना है और गांवकी सेवामें लग जाना है। स्वयं-सेवकोंकी कितनी बड़ी सेना हिन्दूधर्मने तैयार की है! लेकिन हम आज धर्मका केवल नाम लेते हैं, धर्म तो भूल ही गये हैं। . . . अैसे सेवा-केन्द्रके लिअे अिन लोगोंको बाहरसे सेवक लानेकी चिन्ता करनी पड़ती है। लेकिन मुझे तो अिस गांवके मनुष्य सेवक ही दिखाअी देते हैं। वे सेवामें क्यों नहीं लग जाते?" और फिर अंतमें कहा — "मनुष्य जन्म बहुत पुण्यसे प्राप्त होता है। अिसलिअे आपको अगर यह विचार जंच जाय, तो विषय-वासनासे मुक्त होनेका प्रयत्न कीजिये और सेवामें लग जाअिये।"

यहां विनोबाके हाथों आश्रमकी नींव भी डाली गअी थी, अिसलिअे सेवकोंको अपनी जिम्मेदारीका भान कराते हुअे अुन्होंने

www.vinoba.in

कहा: "अब आश्रम-जैसी संस्थाओंमें काम करनेवाले कार्यकर्ता अगर अपने जीवनकी आवश्यकताओंके लिअे कांचनाश्रित रहेंगे, तो क्रांति नहीं कर सकेंगे। अुन्हें परिश्रम द्वारा अपने जीवनकी बुनियादी आवश्यकताओंकी पूर्ति करनी चाहिये। अन्न, वस्त्र, तरकारी, फल, दूध तथा शिक्षण और स्वास्थ्य, ये सब अैसी बातें हैं जो आश्रममें ही पूरी हो सकती हैं।" स्वास्थ्यके लिअे औषधियोंका विशेष सहारा लिये बिना कुदरती अिलाजका निष्ठापूर्वक प्रयोग करनेकी सलाह दी। स्वावलम्बी साम्ययोगकी यह सप्तपदी बताकर विनोबाने आश्रमकी मजबूत नींव डाली।

दा० मूं०

# "गिरिधारि लला म्हने चाकर राखोजी"

### रचनात्मक कार्यकर्ता भक्तके-से चाकर बनें

यह लेख साधारणतया बुद्धिजीवियोंके लिअे, विशेषतः अुन रचनात्मक कार्यकर्ताओंके लिअे है, जो बहुतांशमें बुद्धिजीवी हैं। यों तो देशको बनानेके या देशकी भलाअीके जो जो काम किये जाते हैं, वे सब रचनात्मक कहे जा सकते हैं। पर जब सर्वोदय-समाजके लोग रचनात्मक कामका अुल्लेख करते हैं, तब अिसका मतलब सर्वोदयी समाजकी रचनामें अुपयोगी होनेवाले कामसे अेवं गांधीजीके बताये हुअे रचनात्मक कार्यक्रमसे होता है। अैसे कामोंमें जो कार्यकर्ता लगे हुअे हैं, चाहे वे पूरा समय वही काम करनेवाले हों या थोड़ा समय, यह लेख विशेष रूपसे अुन्हींके लिअे लिखा जा रहा है। क्योंकि अिसमें लिखे हुअे कार्यक्रमका प्रारम्भ करनेकी आशा अुन्हींसे अधिक की जा सकती है। रचनात्मक कार्यकर्ताको अपनी समाज सेवा अीश्वर-भक्तिके रूपमें करनी चाहिये। अगर अीश्वरका दर्शन कहीं करना हो, तो वह अुसीमें से अभिव्यक्त अिस सृष्टिमें ही करना श्रेयस्कर है। अुसकी भक्तिका अुत्तम रूप अुसके बनाये हुअे जनसमाजकी सेवा ही है। अूपर लिखा शीर्षक भक्त मीराके अेक प्रसिद्ध भजनकी टेक है। वह अीश्वरसे अपनेको चाकर रखनेकी विनती कर रही है। चाकरीसे मतलब शरीरसे सेवा करना होता है। रचनात्मक कार्यकर्ताओंके लिअे भी अैसी चाकरी ढूंढ़ना जरूरी है।

### चरखा-संघकी अहम तजवीज

मैं अुनका ध्यान चरखा-संघके हालमें पास किये हुअे नीचे लिखे प्रस्तावकी ओर खींचना चाहता हूं:

"चरखा-संघके कार्यक्रममें शोषणहीन समाज-रचनाके हेतु जब तब्दीली करना मंजूर कर लिया गया, तब हमारी दृष्टि अर्थ-प्रधान व्यापारमूलक कार्यसे हटकर स्वावलम्बनकी ओर अधिक मात्रामें आगे बढ़ना स्वाभाविक ही है। परिणामतः श्रमनिष्ठा या अुत्पादक परिश्रमकी बात ज्यादा महत्त्वकी हो गअी है। अुसी हेतु अनेकविध कार्यक्रम हाथमें लिये जा रहे हैं, जिनका लक्ष्य वर्ग-विहीन साम्यवाद या सर्वोदय है। संघ यह भी महसूस करता है कि यह तभी हो सकेगा, जब मनुष्य-मात्र अुत्पादक परिश्रमके तत्त्वको कार्यान्वित करनेके लिअे अुद्यत हो।

"अतअेव चरखा-संघ अपने कार्यकर्ताओंसे यह अपेक्षा रखता है कि वे अपने यहां चलनेवाले शरीरश्रमके कार्यमें श्रमिकवर्गके साथ आग्रहपूर्वक और वर्ग-विहीनताके विचारसे समरस होनेका निग्रह रखें और संभव हो तो संस्थाके बाहर दूसरे लोगोंके यहां भी अुसी दृष्टिसे प्रत्यक्ष मजदूरी कमानेका कार्य महीनेमें कमसे कम २४ घंटे करें और अुसकी वाजिब मजदूरी संघमें जमा करा दें। अपने केन्द्रमें काम करनेके बजाय बाहर जाकर मजदूरीका काम करनेसे वर्ग-विषमता दूर करनेकी दिशामें हम अधिक आगे बढ़ सकेंगे।"

### तत्त्व और अमलका रास्ता

अिस प्रस्तावके पहले हिस्सेमें तात्विक भूमिका देकर अुसके दूसरे हिस्सेमें अुन तत्त्वोंके अमलके रूपमें क्या करना चाहिये, यह कहा गया है। यद्यपि प्रस्तावमें यह सुझाव चरखा-संघके कार्यकर्ताओंको लक्ष्य करके लिखा गया है, तथापि वह सारे रचनात्मक कार्यकर्ताओंके गौर करनेे लायक है। अुनके द्वारा भी अुसका अमल होना जरूरी है।

अिस कार्यक्रममें दो बातें मुख्य हैं। अेक, महीने भरमें कमसे कम २४ घंटे परिश्रम करना। दूसरी, वह काम दूसरोंके यहां मजदूरी लेकर करना।

### कामकी मात्रा

यह मानना चाहिये कि साधारण मजबूत आदमी दिन भरमें ६ से ८ घंटे तक काम कर सकता है। अर्थात् २४ घंटोंका काम तीन या चार रोजमें पूरा हो सकता है। बहुत कुछ संभव है कि बुद्धिजीवियोंको शरीरश्रम करनेकी आदत न होनेके कारण अुनसे शायद दिन भरमें चार घंटोंसे अधिक काम न हो सके। अिस दशामें अधिक दिन काम करना पड़ेगा। यह बात नहीं है कि लगातार हर रोज काम करना चाहिये। जब-जब अवकाश और काम मिले, तभी किया जा सकता है। दिनमें घंटा दो घंटा ही काम करनेका अवकाश या शक्ति हो, तो वैसा भी किया जा सकता है। पर यह बात तो कामके स्वरूप पर और काम देनेवालेकी अिच्छा और सुविधा पर निर्भर रहेगी। कार्यकर्ताको अपना कार्यक्रम सारी परिस्थितिका विचार करके बनाना होगा। काम मिलनेके बारेमें शंका न होनी चाहिये। देहातमें खेती आदिके अनेक काम चलते रहते हैं। हरअेक मौसममें विशेष काम रहते ही हैं, जब कि मजदूरोंकी कमी महसूस होती है। शहरोंमें मकान बनाना, रास्ते बनाना, कारखानों आदिमें अनेक प्रकारके काम चलते हैं, जिनमें मजदूर लगाये जाते हैं। बढ़अी, राज आदि कुशल कारीगरोंके काम हरअेक नहीं कर सकता, पर मिट्टी, पत्थर, माल ढोना आदि सादी मजदूरीके काम हर कोअी कर सकता है।

### दूसरोंके यहां मजदूरीसे

कार्यक्रमकी दूसरी महत्त्वकी बात है दूसरोंके यहां मजदूरी लेकर काम करना। अिस कार्यक्रमका यह पहलू प्रधान है। कुछ समयसे शरीरश्रमकी प्रतिष्ठा बढ़ानेकी दृष्टिसे अनेक कार्यकर्ता, जो पहले शरीरश्रमका काम नहीं करते थे, अपने घर पर या संस्थाओंमें कुछ न कुछ श्रम, जैसे कि घर तथा अड़ोस-पड़ोसकी सफाअी, खेती-काम आदि करने लगे हैं। अिन व्यक्तिगत या संस्थागत कामोंके अलावा सार्वजनिक सेवाके, जैसे कि गांवकी सफ़ाअी, रास्तोंकी दुरुस्ती, बांध बांधना, खादके गड्ढ खोदना आदि सामुदायिक कामोंमें वे नियमित रूपसे या समय-समय पर शामिल होने लगे हैं। यह सब अभिनंदनीय है। अिस प्रकारका काम अधिक व्यापक बनना चाहिये। पर अिससे भी आगे बढ़कर प्रस्तावमें लिखे हुअे कार्यक्रमका महत्त्व विशेष है।

### श्रमिक जीवनके साथ समरस होना

हमारे सामाजिक वर्गभेदोंमें बुद्धिजीवियों और श्रमजीवियोंका वर्गभेद बहुत गहरा है। बुद्धिजीवी श्रेष्ठ माने जाते हैं और श्रमजीवी हीन। हमारी सांस्कृतिक परम्परामें अैसी कुछ बात भरी पड़ी है कि श्रम करना हलकी बात मानी जाती है, जो कि अन्य देशोंमें नहीं पाअी जाती। श्रम करनेवाले छोटे माने जाते हैं, न करनेवाले बड़े। वर्णभेद और जाति-भेदमें भी यह बात है। श्रमको सब टालना चाहते हैं। पर मनुष्यके जिन्दा रहनेके लिअे अन्न, वस्त्र, मकान आदि जिन चीजोंकी जरूरत है, वे सब श्रम किये बिना पैदा हो ही नहीं सकतीं। प्रायः सब गरीब लोग शरीरश्रम तो करते ही हैं, पर लाचारी और बेबसी महसूस करके; नहीं तो अुनका जिन्दा रहना

www.vinoba.in

मुश्किल हो जाय। श्रीमान् लोग अपने पैसेके बल पर दूसरोंके श्रमकी चीजें खरीदकर आराम कर सकते हैं। अुससे श्रमिकोंका शोषण होता है। बुद्धिजीवी अपनी बुद्धिके बलसे अधिक पैसा कमाता है, जब कि श्रमजीवी बड़ी मुश्किलसे अपना गुजर-बसर चला सकता है। क्या यह आश्चर्यकी बात नहीं है कि समाजको जिन्दा रखनेकी चीजें बनानेवाला श्रमिक आधे पेट रहे और अुनका अुपभोग करनेवाला बुद्धिजीवी आराममें? बुद्धिजीवी बड़े और आदरणीय माने जाते हैं और श्रमजीवी तुच्छ। क्या यह सामाजिक विषमता कल्याणकारी हो सकती है? श्रमजीवी बुद्धिजीवी बननेकी अिच्छा रखता है। अगर सब लोग बुद्धिजीवी बन जायं, तो क्या समाज अेक दिन भी टिक सकेगा? हमारी सामाजिक विचारधारामें अिस क्रांतिके होनेकी जरूरत है कि श्रमिकका जीवन बुद्धिजीवियोंकी अपेक्षा अधिक प्रतिष्ठित है। अिसका अेक कारगर अुपाय यह है कि बुद्धिजीवी लोग कुछ अंशमें तो भी श्रमिक बनें। अिसका सबसे अधिक असरकारक मूर्त स्वरूप यही हो सकता है कि वे दूसरोंके यहां मजदूरी लेकर काम करें।

### आर्थिक, सामाजिक विषमताका परिहारक

पाठक कल्पना करें कि जब समाजमें प्रतिष्ठित माने जानेवाले बुद्धिजीवी लोग, थोड़े ही समय क्यों न हो, साधारण मजदूरकी तरह काम करेंगे, तो समाजके विचारोंमें कितना बड़ा परिवर्तन हो जायगा! शरीरश्रमका काम करनेमें किसीके मनमें हिचक नहीं रहेगी। आज अत्यन्त महंगाअी और आवश्यक चीजोंकी कमीके कारण छोटे दरजेका मध्यमवर्ग अत्यन्त त्रस्त हो रहा है। राजकीय नियंत्रणोंके कारण छोटे पैमानेका व्यापार प्रायः ठप-सा हो गया है। अिस वर्गके बहुतसे लोग खाली बैठे रहते हैं। अुधर शरीरश्रमके कामोंके लिअे मजदूरोंकी कमी है, हालांकि कअी जगह मजदूरीकी मात्रा खासी अच्छी है। पर सामाजिक परम्पराके कारण अिन मध्यमवर्गके स्त्री-पुरुषोंके लिअे श्रम द्वारा पेट भरनेका मार्ग बन्द है। अुधर हमारे विद्यार्थी वर्गको देखिये। जिनके घरोंमें परम्परासे श्रमका जीवन चला आया है, अुनके बालक जब पढ़-लिख लेते हैं, तो वे अपने हाथका, अपने घरका काम छोड़कर बुद्धिजीवी बननेके पीछे लग जाते हैं। शिक्षाकालमें भी, जब कि करीब आधा समय छुट्टियोंमें ही बीतता है, वे प्रायः श्रमका काम नहीं करते। अुनमें बहुतसे गरीब होते हैं, जो छात्रवृत्तियोंके लिअे कोशिश करते रहते हैं या दूसरोंसे सहायता मांगते हैं या वे अथवा अुनके घरवाले कर्ज लेकर पढ़ाअीका क्रम जारी रखते हैं। पर छुट्टीके समयमें मजदूरी करके कुछ कमानेकी अिच्छा नहीं रखते। परदेशोंमें, विशेषतः अमेरिकामें, जानेवाले कअी विद्यार्थी वहां छुट्टियोंमें मेहनत-मजदूरी करके अपने खर्चका खासा हिस्सा निकाल लेते हैं। पर हमारी सामाजिक विचारधारा यहांके विद्यार्थी वर्गको अैसी कमाअी करनेसे रोकती है। अिन सब बातोंमें तभी सुधार होना संभव है, जब कि श्रमजीवी और बुद्धिजीवीके बीचका अूंच-नीचका भाव हटे और बुद्धिजीवी मजदूरी करनेमें दोष न देखे। अूपर लिखे प्रस्तावके कार्यक्रममें आर्थिक और सामाजिक विषमता घटानेकी शक्ति है।

### मजदूरोंके लिअे भी प्रेरक बनें

श्रमजीवी श्रमका काम तो करते हैं, पर अुसे वे यथासंभव टालनेकी अिच्छा रखते हैं। मजदूरी कितनी भी अधिक बढ़ा दी जाय, तथापि वे काम तो कमसे कम करनेकी ही अिच्छा रखेंगे। परिणाम यह होता है कि देशमें सर्वत्र अुत्पादन बढ़ानेकी पुकार होते हुअे और श्रमिकोंका निर्वाह खर्च पूरा सहन करते हुअे भी प्रत्यक्ष काम तो करीब आधा ही पल्ले पड़ता है। अिस दशामें सम्पत्तिका अुत्पादन बढ़नेकी आशा कैसे रख सकते हैं? देशकी कितनी बड़ी हानि हो रही है? शरीरश्रमके लिअे प्रेमनिष्ठा बढ़े बिना हमारा अुद्धार कैसे हो सकेगा? समझदार बुद्धिजीवी कार्यकर्ता क्रांतिकी दृष्टिसे मजदूरकी तरह काम करेंगे, तो अुसका असर साधारण मजदूरों पर भी पड़ेगा और सोहबत-संगतसे अुनका मानस सुधरनेमें और अीमानदारीसे काम होनेमें मदद मिलेगी।

### दोनों वर्गोंके हितकी कीमिया

मजदूरी लेकर काम करनेकी बात कहनेमें अुद्देश्य यह है कि कार्यकर्ता लगनके साथ काम करें और दाम देनेवाला पूरा काम चाहे। अिसके अलावा, हमारी श्रमिकतामें असलियत आवे और समाजमें अिस भावका भी अुदय हो कि मजदूरी लेकर काम करनेमें हीनता नहीं है। किसीने यह शंका की है कि जिनको शरीरश्रम करनेकी आदत नहीं है अर्थात् जो पूरा काम नहीं कर सकते हैं, अुनको दाम देकर कौन और क्यों काममें लगायेगा? यह प्रश्न तो तब हो सकता है कि जब कार्यकर्ता अपने कामके हिसाबसे अधिक मजदूरी चाहे, जैसे कि दूसरे मजदूर चाहते हैं। रचनात्मक कार्यकर्ता तो अपने कामके हिसाबसे कुछ कम ही मजदूरी लेकर संतोष माननेवाला होगा। हां, काम न मिलनेका अेक कारण यह हो सकता है कि प्रतिष्ठित माने जानेवाले बुद्धिजीवीको साधारण मजदूरकी तरह काम देनेमें कोअी संकोच करे। पर आशा है कि अपना अुद्देश स्पष्ट करने पर और समाजहितका खयाल जाग्रत हो जाने पर काम मिलनेमें कठिनाअी नहीं होगी। यह दलील भी फजूल है कि साधारण मजदूर लोग, अुनका काम छिन जानेके भयसे, अिन बुद्धिजीवियोंसे द्वेष करेंगे। बहुत ज्यादा संख्यामें तथा परिमाणमें तो कार्यकर्ता यह कार्यक्रम अपनावेंगे नहीं, और यह सारा प्रयास श्रमजीवियोंके हितका ही होनेके कारण गलतफहमी नहीं रहेगी। बुद्धिजीवी और श्रमजीवियोंके साथ-साथ रहनेसे आपसका परिचय अधिक बढ़ेगा, श्रमिकोंकी अड़चनें अधिक समझमें आयेंगी और अुनको दूर करनेमें मदद मिलेगी तथा दोनों वर्गोंका हित सध सकेगा।

क्या हम आशा रखें कि हमारे रचनात्मक कार्यकर्ता समाज-रूपी अीश्वरकी अुपासना अिस प्रकारकी चाकरीसे करेंगे, और वह भी भक्त मीराकी भावनासे?

सेवाग्राम, २२-१०-'५१. **श्रीकृष्णदास जाजू**

## "चूज़िंग योर लेजिस्लेटर्स" — धारासभाके सदस्य चुनना

यह अुस पुस्तिकाका नाम है, जो शोलापुरके अिन्स्टिटचूट ऑफ पब्लिक अेडमिनिस्ट्रेशनकी तरफसे श्री श्रीराम शर्मा द्वारा प्रसिद्ध की गअी है। यह छोटे-छोटे ६० पैरोंमें मतदाताओंको कीमती सूचना और मार्गदर्शन देती है। आशा है यह केवल अंग्रेजीमें ही प्रसिद्ध नहीं की गअी होगी। यह पुस्तिका जो हिदायतें देती है, वे सादी और अुपयोगी हैं; और सामान्य तौर पर अच्छी जानकारी रखनेवाले लोग भी पायेंगे कि अिसमें अैसी जानकारी दी गअी है, जिसका अुन्हें ज्ञान नहीं है। अिसकी कीमत चार आना है। अगर कीमत अेक आनेसे ज्यादा न रखी गअी होती और अुसे भारतीय भाषाओंमें आम जनताके लिअे सुलभ बनाया जाता तो अच्छा होता।

वर्धा, १६-११-'५१ **कि० घ० म०**

(अंग्रेजीसे)

### विषय-सूची


| | | पृष्ठ |
|---|---|---|
| विनोबाजी दिल्लीमें | कि० घ० मशरूवाला | ३३७ |
| राष्ट्रीय शिक्षामें अंग्रेजीका स्थान | मगनभाअी देसाअी | ३३७ |
| श्री शूरजी वल्लभदास | कि० घ० मशरूवाला | ३३९ |
| कांग्रेस और रचनात्मक कार्यकर्ता | कि० घ० मशरूवाला | ३४० |
| विनोबाकी तेलंगाना–यात्रा : ८ | दा० मूं० | ३४२ |
| "गिरिधारि लला म्हने चाकर राखोजी" | श्रीकृष्णदास जाजू | ३४३ |
| टिप्पणी : | | |
| "चूज़िंग योर लेजिस्लेटर्स" — धारासभाके सदस्य चुनना | कि० घ० म० | ३४४ |


www.vinoba.in